अनोखी चूत चुदाई के बाद-2

“मैंने कितना प्रयास किया था उन सब बातों से बचने का… लेकिन तू तो पूरी निर्वस्त्र होकर मुझसे लिपटी जा रही थी और तो और मेरा लिंग भी तूने अपने मुंह में भर के चूसा और न जाने क्या क्या… …”

Story By: Sukant Sharma (sukant7up)
Posted: Saturday, January 7th, 2017
Categories: रिश्तों में चुदाई
Online version: अनोखी चूत चुदाई के बाद-2

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

अनोखी चूत चुदाई के बाद-2

‘देखो, घबराओ मत, तुम्हारी चिन्ता का कारण मुझे पता है, तुम किसी भी बात की चिन्ता फिकर मत करो।’
‘कौन सी चिन्ता पापा ? मुझे कोई टेंशन नहीं है !’

‘देखो अदिति बेटा, मुझे सब पता है कि तुझे किस बात का टेंशन है, अब मैं इस बात को कैसे कहूँ… देखो, ध्यान से सुनना बेटा ! गलती न तुम्हारी थी न मेरी… वो सब आकस्मिक ही हुआ, कल रात मैंने अपना बिस्तर ऊपर सामान वाली कोठरी में लगा लिया था और मैं जैसे रोज सोता हूँ वैसे ही निर्वस्त्र सो रहा था। अब मुझे क्या पता था कि कोई आधी रात के बाद वहाँ आ जाएगा।’

मेरी बात सुनते ही अदिति ने सर झुका लिया।

‘और फिर मैंने कितना प्रयास किया था उन सब बातों से बचने का… लेकिन तू तो पूरी निर्वस्त्र होकर मुझसे लिपटी जा रही थी और तो और मेरा लिंग भी तूने अपने मुंह में भर के चूसा और न जाने क्या क्या…’ मैंने जानबूझ कर अपनी बात अधूरी छोड़ दी।

‘पापा जी, सारी की सारी गलती मेरी ही थी, मेरा ही दिमाग ख़राब हो गया था, अभिनव ने ही मुझे वहाँ ऊपर वाले कमरे में बुलाया था लेकिन वो खुद यहाँ सबके साथ पार्टी करता रहा ऊपर गया ही नहीं ! मैं उससे मिलने को बहुत उतावली और बेचैन थी इसलिए अभिनव के धोखे में आपसे लिपट गई और तरह तरह से रिझाने मनाने लगी, मैं समझी थी कि मेरे इंतज़ार में अभिनव लेटा है, मुझे माफ़ कर दीजिये !’

‘लेकिन अदिति बेटा, कम से कम तुम्हें अपने पति और दूसरे आदमी में फर्क तो पहचानना

चाहिए था ?'

'पापाजी, शुरू शुरू में तो मुझे आपमें और अभिनव में मुझे कोई फर्क नहीं लगा, पर जब मैंने आपका वो अंग पकड़ा तो मुझे लगा कि यह तो अभिनव के अंग से बहुत मोटा और लम्बा है लेकिन मैंने अपनी उत्तेजना में इसे भी अपना वहम समझा और फिर जब आप मुझमें समा गये थे तब भी मुझे लगा कि यह कोई और आदमी है। फिर उस स्टेज पर मैं क्या कर सकती थी तो जो हो रहा था वो होने दिया।'
'फिर जब सुबह मैं सोकर उठी तो अकेली थी, अगर रात अभिनव मेरे साथ होता तो वो तब तक सो रहा होता क्योंकि वो काफी देर तक सोता है। मैं समझ गई थी कि मैं छली जा चुकी हूँ और तभी से चिन्ता में थी पता नहीं वो कौन था जिसे अनजाने में ही मैंने अपना तन सौंप दिया था। आपने अच्छा किया जो मुझे हकीकत बता दी, नहीं तो मैं पता नहीं क्या करती !'

'पापा जी, भगवान् जी गवाह हैं कि इसके पहले अभिनव के सिवा किसी और ने मुझे गलत नीयत से छुआ भी नहीं था। मैंने अपना कौमार्य भी सुहागरात को अभिनव को ही समर्पित किया था। पापा जी, मैं यकीन करो, मैं ऐसी वैसी बिल्कुल नहीं हूँ, आपने तो बहुत कोशिश की थी कि गलत काम न करो मेरे साथ लेकिन मेरी ही मति मारी गई थी ; मैं आपको तरह तरह से उत्तेजित कर रही थी फिर आप भी कहाँ तक खुद पर काबू रख सकते थे।'

अदिति रुआंसी होकर बोली और मेरे कदमों में सर झुका कर रोने लगी।
और जल्दी ही उसका रोना थोड़ा तेज हो गया।

रोने की आवाज सुन के कोई भी आ सकता था, 'अदिति बेटा, कोई बात नहीं, चल भूल जा उस बात को !' मैंने उसे सांत्वना दी लेकिन उसकी रुलाई रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। फिर मैंने अदिति को पकड़ के उठाया और अपने से लगा कर उसकी पीठ सहलाते हुए उसे सांत्वना देने लगा। मेरे आत्मीय आलिंगन की अनुभूति कर अदिति का रोना और तेज हो

गया जैसे कि बच्चों में होता ही है।

‘अब जल्दी से चुप हो जा, देख मेहमानों से भरा घर है, कोई भी तेरे रोने की आवाज सुन के कभी भी यहाँ आ सकता है।’ मैंने उसके बालों में हाथ फेरते हुए उसे सांत्वना दी।

मेरी बात सुन के अदिति ने खुद पर कंट्रोल किया और उसका सुबकना कम हो गया लेकिन वो मेरे आलिंगन में बंधी रही।
मैंने प्यार से उसके आंसू अपने रुमाल से पौंछ दिए और उसे फिर से कलेजे से लगा लिया और उसकी पीठ और सर पर आहिस्ता आहिस्ता दुलारते हुए उसे शान्त करने लगा, वो भी मेरी छाती में सिर छुपाये चुप बंधी रही मुझसे!
समय जैसे थम सा गया और दो जिस्म जैसे आपस में बातें करने लगे।

सांसारिक रिश्तों के बंधनों से अलग स्त्री-पुरुष, नर-मादा जिस्मों का मिलन अपनी ही रागिनी छेड़ देता है, प्रकृति के अपने स्वतंत्र नियम हैं, युवा भाई बहन, पिता पुत्री इत्यादि को इसीलिए एकान्त में एक साथ रहने, सोने को मना किया गया है। उत्तरी दक्षिणी ध्रुवों में परस्पर खिंचाव होता ही एक दूजे में समा जाने के लिए…

हमारे बीच भी वही हुआ, मेरे स्नेह प्यार का बंधन, आलिंगन बहुत जल्दी काम-पाश में बदलने लगा और अब मेरे बाहुपाश में जकड़ी हुई एक भरपूर जवान नारी देह थी जिसे मैंने कल रात पूर्ण नग्न रूप में भोगा था।

बहूरानी अदिति के जिस्म की उष्णता, उसके गुदाज भरे भरे स्तनों का वो मादक स्पर्श मुझमें वासना की आग भरने लगा जिसके प्रत्युत्तर में मेरे लंड ने फुंफकार कर बहूरानी के जिस्म में टोहका लगा कर अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी।
जिसके जवाब में मुझे लगा कि जैसे अदिति ने अपना बदन मेरे और नजदीक ला दिया हो!
आखिर अब तो वो जान ही गई थी पिछली रात वो मुझसे ही चुदी थी और उसका तन मन

भी जरूर उसी सुख की लालसा फिर से करने लगा होगा।

हालांकि मेरे भीतर से आत्मा का एक क्षीण सा प्रतिवाद उठा, मेरे संस्कारों ने मुझे झिंझोड़ा, चेताया कि यह पाप मार्ग है, अब भी संभल जा लेकिन मन ने अपना ही तर्क दिया कि जब एक बार चोद लिया या चोदना पड़ा तो अब क्या आदर्शवादी बने रहना ?

और मैं चाह कर भी अदिति को अपने बाहुपाश से मुक्त न कर सका और न अदिति ही मुझसे छूटने का कोई प्रयास कर रही थी जबकि मेरा खड़ा लंड उसके पेट पर दस्तक दे ही रहा था और यह भी संभव नहीं था कि वो लंड के स्पर्श से अनजान रही हो !

'अदिति बेटा तू बहुत अच्छी है !' मैंने कहा और उसका गाल चूम लिया।

'अच्छा ? वो कैसे पापा जी ?' वो मेरी आँखों में आँखें डाल के बोली और उसकी बाहें मेरे इर्द गिर्द और कस गईं।
'बताऊंगा, पहले यह बता कि जो रिश्ता कल अनजाने में बन गया उसमें तुझे कुछ आनन्द आया था या नहीं ?'
'कैसे बताऊँ पापाजी, वैसा स्वर्गिक सुख मुझे कभी नहीं मिला ! मेरा तन मुझे इतना आनन्द भी दे सकता है मैंने कभी कल्पना ही नहीं की थी इसकी !' वो आँखें झुका कर धीमे से बोली।

'तो फिर वही रिश्ता हमारे बीच फिर से बन सकता है न ?'
'मैं क्या बोलूं पापा जी ? कल तो गलती से गलती हो गई मेरे से लेकिन बहुत रिस्क है इसमें ! कभी बात खुल गई तो मैं मर ही जाऊँगी।'

'सिर्फ एक बार और मिल ले बेटा, दो तीन दिन बाद तो अभिनव की छुट्टियाँ ख़त्म हो जायेंगी फिर तू उसके साथ चली ही जायेगी न !'

‘पापा जी अब मैं आपको मना भी कैसे कर सकती हूँ आपको उस काम के लिए, जैसे आप चाहो !’ वो सर झुका कर धीमे स्वर में बोली।
‘थैंक यू बेटा !’ मैंने कहा और फिर से बहूरानी को चूम लिया।

‘पापा जी, अब बताओ मैं कैसे अच्छी लगी थी आपको ?’ अब वो थोड़ा इठला कर बोली।
‘मेरे कहने का मतलब था तेरा वो नया रूप जो कल मैंने देखा, कितनी सजीली रसीली, मस्त मदमस्त है तू !’ मैंने कहा और उसकी पीठ सहलाते हुए उसकी ब्रा का हुक छेड़ने लगा।

‘हुंम्म, ऐसा क्या नया लगा मुझमें जो मम्मी जी में नहीं है ?’ वो मेरे सीने में अपना मुंह छिपाकर बोली।
‘तेरा ये जवान जिस्म ये भरे भरे बूब्स और…’ मैंने कहा और एक हाथ उसके ब्लाउज में घुसा कर दूध को मुट्ठी में भर लिया।
‘और क्या पापा जी ?’
‘और तेरी ये…’ मैंने वाक्य को अधूरा छोड़ कर साड़ी के ऊपर से ही उसकी चूत को सहलाया।
‘ये क्या ?’
‘तुम्हारी प्यारी रसीली कसी हुई टाइट चूत !’ मैं उसके कान में फुसफुसाया।

‘धत्त…. कैसे गन्दे शब्द बोलते हो आप ? मुझे जाने दो अब !’ वो बोली और मुझसे छूटने का उपक्रम करने लगी।
लेकिन मैंने उसे जोर से चिपटा लिया और उसके होठों पर होंठ रख दिए।

उसने कुछ देर अपने होंठ मुझे चूसने दिए फिर छिटक कर अलग हो गई- कोई आ जाएगा पापा जी, मैं जाती हूँ, आप आज रात को भी वहीं छत पर कोठरी में ही सोना !’ वो कहती हुई भाग गई।

मेरा मन अब प्रफुल्लित हो गया था और सारी चिन्ताएं मिट गईं थी।
दोपहर के तीन बजने वाले थे, पिछली रात सो न पाने की वजह से एक नींद लेने का मन कर रहा था।

सो कर उठा तो टाइम पांच से ऊपर ही हो गया था, अब मन में अजीब सी उमंग और युवाओं जैसा उत्साह और जोश रगों में ठाठें मार रहा था।
वाशरूम में जाकर अपनी झांटें कैंची से कुतर दीं, झांटों के ठूंठ चूत के दाने से रगड़ कर संगिनी को एक अलग ही आनन्द देते हैं और मैं वही मज़ा अपनी बहूरानी की चूत को देना चाहता था।

और फिर अच्छे से नहा धोकर तैयार हो गया।

शाम घिरने लगी थी तो मैं मेहमानों के चाय पानी, डिनर का इंतजाम करने में व्यस्त हो गया। इसी बीच ऊपर जाकर कोठरी में एक बार झाँकने का मन हुआ। फिर ध्यान आया कि वहाँ का बल्ब तो कब का फ्यूज है ; कुछ सोच कर मन ही मन मुस्कुराया और एक तेज रोशनी वाला नया एल ई डी बल्ब ले जाकर वहाँ लगा दिया।

कोठरी तेज रोशनी में नहा गई।

देखा तो चकित रह गया, कोई आकर वहाँ की साफ़ सफाई कर गया था, तीन मोटे मोटे गद्दे का बिस्तर बिछा था जिस पर धुली हुई बेडशीट बिछी थी और तीन चार मोटे मोटे तकिये और एक सफ़ेद नेपकिन भी बिस्तर पर पड़ा था।

यह सब देख मैं मन ही मन मुस्कुराया कि कितनी सुघड़ और चतुर है मेरी बहूरानी!

अँधेरा घिरते ही अभिनव एंड पार्टी ने कल वाला बियर और ड्रिंक्स का दौर शुरू कर दिया, मैंने भी कोई टोका टाकी करना मुनासिब नहीं समझा, मेरे लिए तो ये और भी अच्छी बात

थी कि अब बेटे की तरफ से भी कोई चिन्ता नहीं रहेगी।

सबका खाना पीना होते होते टाइम ग्यारह से ऊपर का ही हो गया। अभिनव एंड पार्टी कल रात की ही तरह मिश्रा जी के यहाँ शिफ्ट हो गई और बाकी मेहमान भी कल ही की तरह एडजस्ट हो गये।

मेरी आँखें अदिति को खोज रहीं थीं लेकिन पट्ठी कहीं नज़र ही नहीं आई।

मैंने भी अपनी ऊपर वाली कोठरी की राह ली और जा कर लेट गया।
'अदिति आयेगी ?' यह प्रश्न मन में उठा साथ में मैंने अपनी चड्डी में हाथ घुसा के लंड को सहलाया।

कहानी जारी रहेगी।
sukant7up@gmail.com

Other stories you may be interested in

बॉस की वाइफ की कामवासना सन्तुष्टि

मेरे प्यारे दोस्तो, मैं नवीन दिल्ली से आपके लिये पहली बार कोई कहानी लिख रहा हूँ. मैं अन्तर्वासना का बहुत बड़ा फैन हूँ.. और रोज़ इसमें आयी हुई कहानियां पढ़ता हूँ. अगर मेरी इस पहली कहानी में कोई त्रुटि या […]
Full Story >>>

पड़ोसन भाभी को चुदाई के लिए बोला तो …

दोस्तो, मेरा नाम विराज है. मैं अभी 25 साल का हूँ. आज मैं आपको अपनी एक सच्ची कहानी बताने जा रहा हूँ. यह बात आज से एक साल पहले की है और एकदम सही घटना मेरे और मेरे पड़ोस में […]
Full Story >>>

मेरी प्रेयसी और मैं: दो बदन एक जान-1

मीता मेरी प्रेयसी प्रियतमा शरीके-हयात सब कुछ थी. उसकी शादी के पहले तक हम दोनों में जो सम्बन्ध था वो पति पत्नी से कम नहीं था और गरलफ्रेंड बॉयफ्रेंड के रिश्तों से काफी ऊपर था. उसके कॉलेज पढ़ने के सालों […]
Full Story >>>

नर्स सेक्स स्टोरी : गदर माल

अन्तर्वासना के सभी पाठकों और पाठिकाओं को सुन्दर सिंह का नमस्कार। मैं लगभग 6 महीने से अन्तर्वासना का नियमित पाठक हूँ। यहाँ की कहानियाँ पढ़कर मुझे लगा कि मैं भी अपनी आप बीती घटनाएं यहाँ बता सकता हूँ। मित्रो, यह […]
Full Story >>>

लंड के मजे के लिये बस का सफर-1

दोस्तो, आप सभी को मेरा हृदय से आभार है कि आप लोगों को मेरी लिखी कहानियाँ मजेदार, रोचक लगती हैं और आप लोग मजा करते हो। मेरे कई मेल दोस्त कहते हैं कि मेरी कहानी से एक नया अहसास सा […]
Full Story >>>